नंबर २५ सयोगिकेवलीके- आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का	यो	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सयो.	१ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अप	४।२	० क्षीण सं	१ म.	१ पंचे	१ त्र स.	७ मः. २ व. २ औ २ का १	० अप.	० अक	१ के.	१ यथा.	१ केद	द्र. ६ भा.१ शु.	१ भ.	२ क्षा	० अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार यु. उ.

ऐसा कहना घटित नहीं होता है, क्योंकि, सयोगी जिनके भावेन्द्रियां नहीं पाई जाती हैं । पांचों इन्द्रियावरण कर्मोंकें क्षयोपशमको भावेन्द्रिय कहते हैं। परंतु जिनका आवरणकर्म समूल नष्ट हो गया है उनके वह क्षयोपशम नहीं होता है। और यदि प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका ही ग्रहण किया जावे तो संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त कालमें सात प्राणोंका अभाव होकर कुल दो ही प्राण कहे जायेंगे, क्योंकि, उनके द्रव्येन्द्रियोंका अभाव होता है। अत: यह सिध्द हुआ कि सयोगी जिनके चार तथा दो ही प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे क्षीण संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सात योग होते हैं। वे सात योग कौनसे हैं? आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं--- सत्यमनोयोग, अनुभय-मनोयोग, सत्यवचनयोग, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, कपाटसमुद्घातगत

केवलीके औदारिकमिश्रकाययोग और प्रतर तथा लोकपूराण समुद्घातगत केवलीके कार्मणकाययोग इस प्रकार सयोगिकेवलीके सात योग होते हैं। योग आलापके आगे अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातशुध्दि संयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे

अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, पुव्विल्ल-पज्जत्तीओ तहा चेव ट्ठिदाओ त्ति छप्पज्जत्तीओ भणिदाओ। ण पुण पज्जत्ति-जणिदं कज्जमत्थि। आउअ-पाणो एक्को चेव। केण कारणेण? ण ताव णाणावरण-खओवसम-लक्खण-पंचिदियपाणा तत्थ संति, खीणावरणे ख्ओवसमा -

----

शुक्ललेश्या, भव्यसिध्दिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी और असंज्ञी विकल्पसे रहित, आहारी, अनाहारी; साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोंगोसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगिकेवली गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप-कहनेपर-एक चौदहवां गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों पर्याप्तियोंके होनेका यह कारण है कि पूर्वसे आयी हुई पर्याप्तियां तथैव स्थित रहती हैं, इसलिये यहांपर छहों पर्याप्तियां कही गई हैं। किन्तु यहांपर पर्याप्तिजनित कोई कार्य नहीं होता है, अत: आयुनामक एक ही प्राण होता है।

शंका --- एक आयुप्राणके होनेका क्या कारण है?

समाधान --- ज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमस्वरुप पांच इन्द्रिय प्राण तो अयोगकेवलीके हैं नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि कर्मोके क्षय हो जानेपर क्षयोपशमका अभाव पाया जाता हैं। आनापान, भाषा और मन:प्राण भी उनके नहीं हैं, क्योंकि, पर्याप्तिजनित प्राणसंज्ञावाली शक्तिका उनकेअभाव है। उनके कायबल नामका प्राण भी नहीं है, क्योंकि, उनके शरीर नामकर्मके उदय-जनित कर्म और नोकर्मोंके आगमनका अभाव है। इसलिये अयोगकेवलीके एक आयुप्राण ही होता

है। उपचारका आश्रय लेकर उनके एक प्राण, छह प्राण अथवा सात प्राण भी होते हैं। परंतु यह पाठ अप्रघात है अर्थात् गौण है।

विशेषार्थ --- वास्तवमें अयोगी जिनके एक आयु प्राण ही होता है फिर भी उपचारसे उनके यहां पर एक या छह या सात प्राण बतलाये है। 'जहां मुख्यका तो अभाव हो किन्तु उसके कथन करनेका प्रयोजन या निमित्त हो वहाँ पर उपचारकी प्रवृत्ति होती है' उपचारकी इस व्याख्याके अनुसार यहां चौदहवें गुणस्थानमें क्षयोपशमरुप मुख्य इन्द्रियोंका तो अभाव है। फिर भी अयोगी जिनके पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदय पाया जाता है और वह जीवविपाकी है, इस निमित्तसे उन्हें पंचेन्द्रिय कहना बन जाता है। इसलिये उनके पांच इन्द्रिय प्राणोंका कथन करना भी सप्रयोजन है। इस प्रकार पांच इन्द्रियोंमें आयुको मिला देने पर छह प्राण हो जाते हैं। यहाँ पर इन्द्रियोंसे अभिप्राय उस पर्यायसे है जिससे आयोगी जिनमें पंचेन्द्रियपनेका व्यवहार होता है। साथ ही उस पर्यायके साथ उनके शरीर भी पाया जाता है। अत: इस अपेक्षासे अयोगी जिनके कायबलका कथन करना भी सप्रयोजन है। इस प्रकार पूर्वोक्त छह प्राणोंमें कायबलके और मिला देने पर सात प्राण हो जाते हैं। यद्यपि उनके पहलेकी छह पर्याप्तियां उसी प्रकारसे स्थित हैं, अत: वे पर्याप्तक कहे जाते हैं। तथा पर्याप्तक अवस्थामें मन:प्राण भी होता है, इसलिये उनके मन:प्राणका भी कथन करना चाहिये था। परंतु उसके कथन नहीं करनेका यह कारण है कि उनमें संज्ञीव्यवहार लुप्त हो गया है। औपचारिक

भावादो १ (मु. भावादो। आणा.) । ण आणावाण-भासा-मणपाणा२ (मु. वि णत्थि।) वि अत्थि, पज्जत्ति- जणिद-पाण-सण्णिद-सत्ति-अभावादो। ण सरीरबलपाणो वि अत्थि, सरीरोदय-जणिद-कम्म-णोकम्मागमा-भावादो। तदो एक्को चेव पाणो। उवयारमस्सिऊण एक्को वा छ वा सत्त वा पाणा भवंति। एस पाढो पुण अप्पधाणो। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, अजोगो अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुध्दिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; लेव-कारण-जोग-कसायाभावादो। भवसिध्दिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता होंति२६ ।

नं. २६ अयोगिकेवलीके- आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का	यो	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञि.	आ.	उ
१ अयोग	१ प.	६	१ आयु	० क्षीण	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	० अयोग	० अपगत	० क्षीण	१ के.	१ यथा.	१ के	६ द्र. ० भाव अलेश्यं.	१ भ	१ क्षा	० अनुभय	१ अनाहारक	२ साकार अनाकार यु. उ.

संज्ञीव्यवहार भी उनमें नहीं माना गया है, अत: अयोगियोंके मन:प्राण नहीं कहा। इसी प्रकार वचनबल और श्वासोच्छ्वासके अभावका भी कारण समझ लेना चाहिये। पहले सयोगी जिनकेजो पांच इन्द्रियां और एक मन इस प्रकार छह प्राणोंका निषेध करके केवल चार ही प्राण बतलाये हैं वह मुख्य कथन है। अत: जिस उपचारकी अपेक्षा यहां छह अथवा सात प्राण कहे हैं वही उपचार वहाँ भी लागू होता है। आयु प्राण तो अयोगियोंके मुख्य प्राण है फिर भी उसे भी उपचारमें ले लिया है, इसलिये इस कथनका विवक्षाभेद ही समझना चाहिये। यहां उपचारका प्रयोजन ऐसा प्रतीत होता है कि विवक्षित पर्यायमें रखना जो आयुका काम है वह यहां भी पाया जाता है, इसलिये तो वह मुख्य प्राण है। फिर भी जीवनका अवस्थान अल्प है। और अवस्थानके कारणभूत नये कर्मोंका आना, योगप्रवृत्ति आदि भी नष्ट हो गये हैं, अत: आयु भी इस अपेक्षासे औपचारिक प्राण कहा जाता है। इस प्रकार अयोगियोंके उपचारसे एक या छह सात प्राण कहे गये हैं।

प्राण आलापके आगे-क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोग, अपगत-वेद, अकषाय, केवलज्ञान , यथाख्यात विहारशुध्दिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे लेश्यारहितस्थान होता है। लेश्याके नहीं होनेका यह कारण है कि कर्मलेपके कारणभूत योग और कषाय इन दोनोंका ही उनके अभाव है। लेश्या आलापके आगे-भव्यसिध्दिक, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, संज्ञी और असंज्ञी विकल्पसे रहित, अनाहारक, साकारोपयोग तथा अनाकारोपयोग इन दोनों ही उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

सिध्दाणं ति भण्णमाणे अत्थि एगं अदीद-गुणट्ठाणं अदीद-जीवसमासो, अदीद-पज्जत्तीओ, अदीद-पाणा, खीणसण्णा,१ (मु. सिध्दगदी।) सिध्दिगदी, अणिंदिया, अकाया, अजोगिणो, अवगदवेदा, खीणकसाया, केवलणाणिणो, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा, केवलदंसणं, दव्व भावेहिं अलेस्सिया, णेव भवसिध्दिया२ (मु. भवसिध्दिया, खइय) णेव अभवसिध्दिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुजुत्ता होंति२७

नं. २७ सिध्दोंके- आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	सं.	संज्ञि.	आ.	उ.

०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	१	०	१	०.	०	१	०	१	२
अतीत गु.	अतीत जी.	अतीत प.	अतीत प्रा.	क्षीण सं.	सिध्दगति	अतींद्रिय	अतीतकाय	आयोगी	अपगतवेद	क्षीणक	केवलज्ञान	अनुभय	केवलदर्शन	अलेश्या	अनुभय	क्षायिक स.	अनुभय	अनाहारक	साकार अनाकार युगपत

एवं मुलोघालावो समत्तो।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ,

----

सिध्दपरमेष्ठीके ओघालाप-कहनेपर-अतीत-गुणस्थान, अतीत-जीवसमास, अतीत पर्याप्ति, अतीत-प्राण, क्षीणसंज्ञा, सिध्दिगति, अनिन्द्रिय, अकाय, अयोगी, अवेदी, क्षीणकषाय, केवलज्ञानी, संयत, असंयत और संयतासंयत विकल्पोंसे विमुक्त; केवलदर्शनी, द्रव्य और भावसे अलेश्य, न भव्यसिध्द और न अभव्यसिध्द, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इस प्रकार मूल ओघालाप समाप्त हुआ।

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंके आलाप कहनेपर--- आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालकी अपेक्षा दस प्राण और अपर्याप्तकालकी अपेक्षा सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, औदारिककाययोग औदारिकमिश्रकाययोग आहारक काययोग आहारकमिश्रकाययोग, इन चारों योगोंके विना ग्यारह योग, नपुंसकवेद होता है। एक नपुंसकवेदके होनेका यह कारण है कि नारकी जीव द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षा नपुंसकवेदी होते हैं। वेद आलापके आगे चारों कषायें, तीनों अज्ञान और तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्तत्वकी अपेक्षा कालाकालाभास लेश्या, और अपर्याप्तत्वकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्या होती है। पर्याप्तअवस्थामें जो

णिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-आहार-आहार मिस्सेहिं विणा एगारह जोग, णवुंसयवेदो, णेरइया दव्व-भावेहिं णवुंसयवेदा चेव भवंति त्ति। चत्तारि कसाय, छण्णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउसुक्कलेस्साओ, दव्वलेस्सा कालाकालाभासा१ (मु. सुट्ठ-कण्हेत्ति।) सुट्ठु कसणे त्ति जं वुत्तं होदि। एसा णेरइयाणं पज्जत्तकाले सरीरलेस्सा भवदि। विग्गहगदीए पुण णेरइयादि-सव्व-जीवाणं दव्वलेसा सुक्का चेव भवदि, कम्मविस्ससोवचयस्स धवलवण्णं मोत्तूण अण्ण-वण्णाभावादो। सरीर-गहिद-पढम-सयम-प्पहुडि जाव अपज्जत्त-काल-चरिम-समओ त्ति ताव सरीरस्स काउलेस्सा चेव, सवलिद-सयल-वण्णादो। भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२८ ।

नं. २८ नारकसामान्य - आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का	यो	वे.	क	ज्ञा.	सय	द	ले	भ	स.	संज्ञि	आ	उ

										.							.	.	
४ (१ से ४)	२ सं प. सं. अ.	६ प ६ अ	१० ७	४	१ न.	१ पं.	१ त्र.	११ म.४ व.४ वै.२ कार्म.१	१ न	४	६ अज्ञा.३ ज्ञा.३	१ असं	३ केद विना	द्र. ३ कृ.का.शु. भा ३ अशु	२ भ. अ.	६	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

----

कालाकालाभास लेश्या कही है उसके कहनेका यह तात्पर्य है कि पर्याप्त अवस्थामें कालकालाभास अर्थात् अतिकृष्ण लेश्या होती है। नारकियोंकी पर्याप्त-अवस्थामें यह शरीरलेश्या होती है। किन्तु विग्रहगतिमें नारकी आदि सभी जीवोंकी द्रव्यलेश्या शुक्ल ही होती है, क्योंकि, कर्मोंके विस्त्रसोपचयका धवलवर्ण छोडकर अन्यवर्ण नहीं होता है, तथा शरीरग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर अपर्याप्तकालके चरम समयतक शरीरकी कापोतलेश्या ही होती है, क्योंकि, उस समय शरीर संवलित सकल वर्णवाला होता है। भावकी अपेक्षा तो कृष्ण, नील और कापोतलेश्या होती है। लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिकी अभव्यसिध्दिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिाक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होती हैं।

उन्हीं पर्याप्त नारकियोंके ओघालाप कहने पर-आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार

णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छण्णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२९ ।

नं. २९   नारकसामान्य पर्याप्त - आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का	यो	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द	ले	भ	सं.	संज्ञि.	आ.	उ
४ मि. सा. सं. अ.	१ सं. पं.	६ प.	१०	४ .	१ न.	१ पं चे.	१ त्र स.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ न.	४	६ अ ज्ञा . ३ ज्ञा . ३	१ अ सं	३ के . द. वि ना.	द्र. १ कृ . भा .३ अ शु	२ भ . अ .	६	१ सं.	१ आ हा र	२ सा का र अ ना का र

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया,

तिण्णि सम्मत्ताणि, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं१ (प्रथमायां पृथिव्यां पर्याप्तापर्याप्तकानां क्षायिकंक्षायोपशमिकंचास्ति। स. सि. १,७.)

छह ज्ञान, असंयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या और भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अपर्याप्त नारकियोंके आलाप कहने पर--- मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें विभंगज्ञानके विना कुमति और कुश्रुति ये दो अज्ञान तथा मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, इस प्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक, मिथ्यात्व क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। इनमें वेदकसम्यक्त्व तो कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा होता है और उसमें क्षायिक और मिथ्यात्वके मिला देने पर नारकियोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३० ।

नं. ३० नारकसामान्य अपर्याप्त - आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.

१ मि अ वि.	१ सं. अ.	६ अ प .	७	४	१ न.	१ पं चे.	१ त्र स.	२ वै. मि. का र्म	१ न.	४	५ कु म. कु श्रु. ज्ञा. ३	१ असं .	३ के . द. वि ना	द्र.२ का शु . भा. ३ अ शु.	२ भ . अ .	३ मि . क्षा . क्षा यो .	१ सं.	२ आ हा र अ ना हा र	२ सा का र अ ना का र

संपहि णेरइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी; तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण-किण्ह-णील- काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३१।

नं. ३१ नारकसामान्य - मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.
१ मि.	२ स. प. सं. अ.	६ प. ६ अ .	१० प. ७ अ.	४	१ न.	१ पं चे	१ त्र स.	११ म.४ व.४ वै.२ कार्म.	१ न	४	३ अ ज्ञा.	१ अ सं.	२ च. अ	द्र.३ कृ. का शु. भा.	२ भ. अ .	१ मि थ्या .	१ सं.	२ आ हा र अ

								१						३अ शु.				ना हार	

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

----

अब नारकी मिथ्यादृष्टिजीवोंके आलाप कहनेपर - एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभासलेश्या और अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजसो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धया, मिच्छत्तं, सण्णिण्णो, आहारिणो,सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३२।

नं. ३२ नारकसामान्य - मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु.	ज	प.	प्रा	सं	ग.	इं.	क	यो	वे.	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	सं.	संज्ञि	अ	उ

	ी.		.				ा.	.		.		य .	.	.	ा.		ा .	ा.	.
१ मि.	१ सं. अ.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ न.	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु अच.	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	२ भ ा अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दोण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३३।

नं. ३३ नारकसामान्य - मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.	६ अप.	७ अप.	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस.	२ वै. मि	१ नपु	४	२ कुम.	१ असं	२ चक्षु.	द्र. २ का	२ भ.	१ मिथ्या	१ सं.	२ आह	२ साका

	अ							. का र्म.			कु श्रु .		अ च क्षु	.श ु.भ ा. ३ अ शु .	अ	.		ार अ न ाह ार	र अ ना का र

उन्हीं मिथ्यादृष्टि पर्याप्त नारकी जीवोंके आलाप कहने पर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी - पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तोनों अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभासकृष्णलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ”

उन्हीं मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त नारकी जीवोंके आलाप कहने पर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं वुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३४।

नं. ३४ नारकसामान्य - सासादन आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ च. अच.	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील

और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नारकी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर--- एक सासादान गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाए, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभासलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहानेपर एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

----

काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३५।

नं. ३५ नारकसामान्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु . १ स म्य ा.	ज ी. १ सं .प .	प . ६	प्रा . १ ०	सं . ४	ग ा. १ न ा.	इं . १ प ंच ो .	क ा. १ त्र स .	यो . ९ म. ४ व. ४ वै. १	व `. १ न ाप ु .	क . ४	इ ा . ३ इ ा न. मि श्र . अ इ ा .	संय ा. १ अस ां.	द. २ च . अ च .	ले . द्र. १ कृ भा .३ अ शु .	भ. १ भ.	स . १ स म्य ा.	संङि ा . १ सं.	अ ा. १ अ ा हा र	उ . २ स ाक ा र अ ना क ार

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६ ।

नं. ३६ नारकसामान्य-असंयत सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पं.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ वै.२ कार्म	१ नपुं.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. ३ कृ. का. शु. भा.३ अशु.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो,

----

सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों

मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

छप्पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३७।

नं. ३७ नारकसामान्य - असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ वै.१	१ नपुं.	४	३ मति.श्रुत. अव.	१ असं.	३ केद. विना	द्र.१ कृ.भा.३ अशु.	१ भ.	३ औ.क्षा.क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेंसि चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिध्दिया, उवसम-

----

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त नारकी जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग, ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त नारकी जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक अविरत - सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिध्दिक, उपशमसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३८।

नं. ३८ नारकसामान्य - असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु. १ अवि.	जी. १ सं. अ.	प. ६ अप.	प्रा. ७ अप.	सं. ४	गा. १ ना.	इं. १ पंचो.	का. १ त्रस.	यो. २ वै.मि. कर्म.	वे. १ ना.	क. ४	ज्ञा. ३ मति.श्रुत. अव.	संया. १ असं.	द. ३ केद. विना.	ले. द्र. २ का. शु. भा.३ अशु.	भा. १ भा.	स. २ क्षा. क्षायो.	संज्ञि. १ सं.	आ. २ आहार अनाहार	उ. २ साकार अनाकार

पढमादि-सत्तण्हं पुढवीणं लेस्साओ जाणावेइ एसा गाहा ---

काऊ काऊ' (काऊ काऊ णीला णीला मु.) तह काऊ णीला णीला य णील-किण्हा य।

किण्हा य परमकिण्हा लेस्सा पढमादिपुढवीणं२ (गो. जी. ५२९. प्रतिषु 'काऊ काऊ तह काओ णीलं णीला य णील किण्हा' य इति पाठः।)।।२३७।।

पढमाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण, सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी,

तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छण्णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ,

----

प्रथमादि सातों पृथिवियोंकी लेश्याओंको यह निम्न गाथा बतलाती हैं ---

कापोत, कापोत, कापोत और नील, नील, नील और कृष्ण, कृष्ण तथा परमकृष्ण लेश्या प्रथमादि पृथिवियोंमें क्रमशः जानना चाहिये ।। २३७।।

विशेषार्थ --- प्रथम पृथिवीमें जघन्य कापोतलेश्या होती है, दूसरी पृथिवीमें मध्यम कापोतलेश्या होती है, तीसरी पृथिवीमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या और जघन्य नीललेश्या होती है, चौथी पृथिवीमें मध्यम नीललेश्या होती है, पांचवी पृथिवीमें उत्कृष्ट नीललेश्या और जघन्य कृष्णलेश्या होती है, छठी पृथिवीमें मध्यम कृष्णलेश्या होती है और सातवीं पृथिवीमें परमकृष्णलेश्या होती है।

प्रथम पृथिवीगत नारकोंके सामान्य आलाप कहने पर--- आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्यौप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये ग्यारह योग,

----

भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३९ ।

नं. ३९ प्रथमपृथिवी - नारकसामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. सम्या अवि.	२ सं.प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ ना.	१ पंचो.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १	१ नपु.	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. ३ कृ. का. शुभ १ का.	२ भ. अभ.	६	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादो, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छण्णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा४०।

नं. ४० प्रथमपृथिवी-नारक पर्याप्त आलाप.

गु. ४ मि. सा. स. अ.	जी. १ सं.प.	प. ६	प्रा. १०	सं. ४	गा. १ ना.	इं. १ पंचो.	का. १ त्रस.	यो. ९ म.४ व.४ वै.१	वे. १ नापुं.	क. ४	ज्ञा. ६ ज्ञा.३ अज्ञा.३	संया. १ असं.	द. ३ के.द. विना	ले. १ द्र. कृ. भा.१ का.	भ. २ भ. अभ.	स. ६	संज्ञि १ सं.	आ. १ आहार	उ. २ साकार अनाकार

नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गतपर्याप्त नारकोंके आलाप कहने पर--- आदिके चार गुणस्थान,एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे

कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा४१।